

नोबुल पुरस्कार विजेता मोरिस पेस्टर्नक की महान-कृति

डॉक्टर जिवागो

(रूसी क्रांति के भाग्य का मार्मिक उपन्यास)

अनुवादक श्रीसत्य

सहायक श्री सोहनलाल मेहता, श्री सुद्विवल्लभ चतुर्वेदी

सोहम-प्रकाशन

पो० वा० १७७९.

खुनाथ दादाजी स्ट्रीट, फोर्ट,

बम्बई १

प्रकाशक

श्रीमल,
सोहम् प्रकाशन,
पो० या० १७७९
र० दा० स्ट्रीट, बम्बई १

मुखपृष्ठ

श्री प्रसन्न संठ

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण १९५९
मूल्य
दस रुपये

त्वदीय वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पयेत् —

मानवीय संवेदनाओं व सत्ता-स्पष्ट-दृष्टा और महान लेखक

गोरिन पेस्टर्नक

को

उनकी पुस्तक का यह अनुवाद

उन्हें ही

सादर समर्पित

सिद्ध के प्रणाम

स्पष्टीकरण :—

इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन की प्रेरणा मूल लेखक की प्रतिभापूर्ण प्रभावशाली लेखन शैली और उसके अन्तर्निहित वक्तव्य की मार्मिकता ही है।

* * *

हर दृष्टि से इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन का कार्य बहुत ही जटिल महसूस हुआ है। प्रत्येक सभ्य प्रयत्नों द्वारा इसकी मर्यादा को अशुष्ण रखने का श्रम साध्य प्रयत्न किया गया है।

* * *

इस अनुवाद में उपन्यास की सरस शैली का अन्त तक निभाव करने का प्रयत्न स्पष्ट है।

* * *

लेखक का मुखरित वक्तव्य अपने मौलिक रूप में ही प्रभावशाली रहे, इसके प्रति विशेष ध्यान रखा गया है।

* * *

इसीलिए पहले इसका शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया गया, बाद में उसका मिलान हुआ। फिर सारा उपन्यास दुबारा लिखा गया, सम्पादित हुआ, तब अनिम सशोधन-परिवर्द्धन-परिवर्तन के बाद इसे प्रस्तुत किया गया है। प्रसन्नता इसी बात की है कि इतना परिश्रम करने के बाद इसे सतोषजनक तरीके से सम्पूर्ण किया जा सका। इस कार्य-काल में लगा कि हिन्दी के मरल सरम शब्दों द्वारा किसी भी महान कृति का अनुवाद संभव है।

* * *

इससे श्रेष्ठ अनुवाद हो नहीं सकता, वक्तव्य का यह सन्देश नहीं है। हो सकता है लेकिन इसके लिए इससे औशुनी महान्त अपेक्षित है। ऐसा हो मे यह चाहता हूँ।

* * *

इस योजना को क्रियान्वित करने में श्री सोहनलाल मेहता ने सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण भूमिका भरा की है। बिना श्रम-बोध के उन्होंने विना कष्ट इसके लिए उठाया है, वह उनकी एक निष्ठ-मरलता और चतुर्दिक प्रतिभा का सूचक है।

श्री बुद्धिबल्लभ चतुर्वेदी होनहार तरुण व्यक्ति हैं। भ्रम-कुशल। आशा है, उनका रात दिन का सतत परिश्रम उनके पुत्र भविष्य का सूचक सिद्ध होगा।

*

*

*

अनेक गृहयोगियों के व्यय-भ्रम को भी धन्यवाद मिलना चाहिए। अधूरे काम को छोड़ कर भाग जाने वाले, इन मज्जनों को धन्यवाद दान अथवा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करने में एक ही दर है कि वहाँ वे बुरा न मान जायें। वैसे पुस्तक-प्रकाशन के काय में उनके 'भ्रम से मुक्ति' लाभदायक हा सिद्ध हुई है।

*

*

*

मेरे प्रेस व्यवस्थापक श्री कृष्णअप्पा को इसका मुद्रण की श्रेष्ठता का श्रेय है। वैसे अन्य तमाम प्रेस और प्रकाशन के साधियों के निरन्तर जागरण की सुमारी पुस्तक के अंतिम चरण तक सामने है ही।

*

*

*

एक बात जो सबसे अधिक हृदय-स्पर्शी लगी है—वह है इसी जन-जीवन की भावनाओं से भारतीयता का निकटतम सम्पर्क। बोरिस पेस्ट्रनक की प्रतीक्षात्मक छायावादी भावनाओं को सम्मत् हिन्दी में अभिव्यक्त करना किसी अन्य भाषा के बनिस्पत अधिक सार्थक सिद्ध हुआ है।

*

*

*

महायुद्ध और गृहयुद्ध से सन्नत मानवता के प्रति इस पुस्तक में आदि से अन्त तक जो वक्तव्य है, वह सामयिक, महत्त्वपूर्ण और मार्मिक है।

*

*

*

गुद्ध रूप से यह साहित्यिक प्रयास है और इसे इसी रूप में मान्यता मिले, इस आशा के साथ।

—श्रीसत्य

क्रम :

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
१	पांच बजे की एकमप्रेम	९
२	भिन्न लोक की एक कथा	३२
३	किसमिम महोत्सव	७६
४	भविष्य का पूर्वाभास	१०५
५	व्यतीत	१४३
६	सैन्य शिविर	१४४
७	यात्रा	२१९
८	आगमन	२६७
९	चेरिन्निनी	२८६
१०	महापथ	३१६
११	वन-वास	३३८
१२	पलायन	३६७
१३	धमावशेष	३८४
१४	पागा	४२४
१५	पटाक्षेप	४५९
१६	विशेष	४८६

पात्र - परिचय :

- यूरी** यूरी, यूरा, जिवागो । डाक्टर, लेखक, कवि । कथा नायक ।
- निकोलाय** यूरी की विचारधारा को सत्रसे अधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा देने वाले उसके मामा ।
- एलेक्जेंडर** टोया के पिता । यूरी इन्हीं के यहा बड़ा हुआ था । बाद में यूरी के मसुर ।
- अन्ना** उदारहृदया, एलेक्जेंडर की पत्नी, निमकी मृत्यु ने यूरी के जीवन में अपूरणीय अभाव उत्पन्न कर दिया था ।
- टोन्या** यूरी की बचपन की साथी । पत्नी । यूरी के प्रति अनुरक्त, बाद में भाग्य की विडम्बना के कारण प्रताड़ित ।
- लारा** कोमारोवस्की द्वारा छली हुई सतप्त अनाथ लम्बकी । पाशा की प्रेमात्मक पत्नी । यूरी की उन्मुक्त, मगर गभीर प्रेमिका । उसके जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं की साक्षी । विभिन्न परिस्थितियों में यूरी के जीवन में विशिष्ट भूमिका अदा करनेवाली । उसके काव्य और मनोभूमि के उन्नत धरातल की प्रेरणा । युग की जीती नागती तस्वीर ।
- कोमारोवस्की** लारा के जीवन में अपन अधानुराग द्वारा विप-बाधनेवाला अथेइ वकील । कथा के दुर्यान्त भाग का सूत्रधार ।
- पाशा आन्तिपोव** लारा का पति । प्रतिभाशाली, ओरखी, कर्मठ, शानदायक स्व-ध-सुध । बाद में स्ट्रेलिनिकोव के रूप में प्रस्तुत ।
- गेल्युलिन** पाशा का मित्र होते हुए भी श्वेत दल के लेफ्टिनेन्ट के रूप में घातक शत्रु ।
- पोल्या** पेलेगिया, त्यागुनोवा । क्रांति और गृह-युद्ध में भटकती हुई भाग्य प्रताड़ित लम्बकी ।

सामदेवयातोव	यूरी के महायुद्ध । बाद में लारा व शुभेन्द्र । मस्त स्वभाव के, अत्यंत प्रभावशाली, चातूनी व्यक्ति ।
मिखुलित्सिन	भूतपूर्व जिवागो भवन के व्यवस्थापक और वन्य भानृत्व के नेता, लिवेरियम के पिता ।
लिवेरियस	युद्ध युद्ध के समय सपक्षीय सेना का संचालक ।
ग्लाफिरा	ग्लाशा । हरफन मौला । हर तरह के काम में मुस्तैद ।
सीमा	निकोलाय निकोलायविच के दार्शनिक विचारों से प्रभावित ग्लाफिरा की बहन । लारा की सहेली ।
तान्या	लारा और यूरी की अनाथ लड़की ।
मरीना	यूरी का तीसरा प्रेम काण्ड । मृत्यु साक्षी के समय लारा के अलावा अपना प्रेम व्यक्त करने अपने बच्चों के साथ यही शेष रही ।
वास्या	सपक्षीय सेना से जान-बुझा कर भागा हुआ एक लड़का । पोल्या व प्रति आसक्त । अंतिम चरण में यूरी का सहायक और बाद में उसके साहित्य का प्रकाशक ।
युवग्राफ	जिवागो का सौतेला भाई । मेजर जनरल । प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से यूरी की सहायता करनेवाला ।
डुडरोव, निकी	यूरी के दो मित्र ।



‘साश्नत म्मति’ का गीत गाते हुए वे आगे-आगे चले जा रहे थे। जब

उनके गीतों का स्वर रुक जाता तब उनकी पध्वनि, घोड़ों की टाप

और हवा की साथ साथ उनके गीतों की लय को प्रवाहित करने लगती।

शव-यात्रियों को मार्ग ढंते हुए रास्ते के लोग एक ओर हट जाते। गव पर लटक रहे हारों को गिनते हुए उनके हाथ धधे मस्तक और छाती को छू लेते। तम प्रकार मृतक आत्मा के प्रति वे अपनी धार्मिक श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे।

कौत्लरग कुछ लोग शव-यात्रियों के साथ चलने लगे। रास्ते चलते लोगों मं मे कुछ न पृछा -किमे दफनाया जा रहा है ?

उह प्रत्युत्तर मिला -जिवागो को !

—अउा यह बात है। तमी !

—जिवागो नहीं, यह उमनी पनी है।

पर, मतलब एक ही है। भगवान उसकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

जनाजा बड़ा शानदार निकला है।

प्रत्येक क्षण मृतक के लिए चीन्ता जा रहा था।

पादरी ने मत्र पना - भूमि इइवर की है और उमनी व्याप्ति मभी म है।

पृथिवी और उममं रहनेवालों में वह विग्रमान है।

उमने मार्या निकोलायवना की लाश पर द्वाय के आकार म मिट्टा फैला दी।

‘याय नी अन्तरात्मा -‘मोल आफ द नल’- का गीत आरंभ हुआ।

इसके बाद भयाक्रांत कायवाहा गुरू हुइ। कफन टक दिया गया। कील टोंक दी गयीं और खुड़ी हुइ कत्र म गद को रख दिया गया। चार फावदा ने जल्दी जल्दी मिट्टा ढाली। बरमान की बूँदों का सी आवाज मुनाइ देने लगी। कत्र पर मिट्टा का एक टीला बन गया।

एक दस वर्षीय बालक उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

तब किसी बड़े आदमा की अचष्टी त्रिया सम्पादित होनी है, तो लोगों म भावराहित चतनाग्रय स्थिति आ जाती है। इसी कारण कुछ लोगों को लगा यह बालक भी अपनी मां का कत्र पर खड़ा होकर गोक-सन्श मना चाहता है।

बालक ने अपना सर ऊपर उठाया। सामने पत्नी हुई पतलक व कारण वीरान विस्तीर्ण भूमि और ऊँच उठ हुए आश्रम के शुभ्रदा की ओर वह भाग ग्रह्य नेत्रों से देखता रहा। शोक व कारण छोटी मात्र वाले इस लड़के का चहरा विकृत हो गया था। मन गर्दन सीधी का, ऊपर उठाई। यदि मेड़िये का बचा इसी तरह गर्दन ऊपर उठाकर देखता तो उसका यही अर्थ लगाया जाता कि वह अब चार से चित्त नेगाला है। अपने दोनों हाथों से मुँह टूट कर वह फूट फूट कर रोने लगा। वायु की शीतल ओषमयी लहरियाँ ने उसके चंद्र और हाथों को तरल कर दिया।

इसी समय तब आस्तीन के गले कपड़े पहन एक व्यक्ति उसके पास चला आया। यह था निकोलाय निकोलायविच वेन्येनयापिन। मृत स्त्री का भाई और मर लड़के का मामा। वह पादरी था मगर उसकी अपनी प्रार्थना के कारण उसे म धार्मिक अनुष्ठान के पद से मुक्त कर दिया गया था।

वह बालक के पास गया और उसे लेकर मशानभूमि में बाहर चला आया।

२

उत्ताने वह रात वहीं आश्रम में बिताई। अपने पुराने सम्प्रदाय व कारण को-या को यहाँ जगह मिल गई थी।

पुजारी मरियम की अमरता प्राप्ति के ल्यौहार का वह पहला दिन था।

उनका विचार था कि दूसरे दिन दक्षिण में बो-गा व विनार के एक गहर की ओर ब्रे चले जायें जहाँ को-या मामा एक प्रगतिवादी समाचार पत्र के प्रकाशक के यहाँ काम करते थे। त्रिकट बगैर खरीदे जा चुकें थे। सामान अमराव भी बधा हुआ तैयार था। दूर कर्त पद्माम में डिब्बे जोड़नेवाले स्तन की फूकार हवा में तेरती हुई सी मनाई दे रही थी।

शाम हुई। ठंड पड़ने लगी। कमरे की लाना खिड़कियाँ जमीन की मत्त पर थीं। आश्रम व अंतर्भाग की उपेक्षित वीगन बगिया का कोना यहाँ से दिखाई देता था। वही कोने में घूम कर मुख्य मत्त आगे निकल जाती थी। मद्क पर यहाँ-वहाँ बर्फ पड़ा हुआ था।

इसी खिड़की से गिरजाधर का वह कोना भी दिखाई पड़ता था, जहाँ एक दिन पहले मार्वा निकोलायेवना की अत्येष्टि की गयी थी।

पाच वजे की एकलान्त

अन्तर्भाग के उम माग मन्त्रियोंवाले बगाने म दीनाल क पाम अनाशिक्षा
का साधिया और वर्ष से ठिठुर कर बम्हलाइ हुड गोमी का ने चाग क्यारिया
के अतिरिक्त बुड भा न था ।
किछी प्रत क नशीभून होकर पिना पतावाली आकाशी साधिया नाचती

नाचती धरती पर पसर जाती थी ।
म बरात्रि का गीरवता में बिन्का पर होनवाली गम्हगडाहट से बालक यूग

जाग गया । अथकारमय कमस एक अजीन से प्रवार से भर मा गया । यूग
के शरीर पर मियाय एक कमान के कुठ भा न था, फिर भा वह उठाकर खिडकी
क ठडे शीगे पर नाक लगाकर बाहर झाकने का कोशिश करन लगा ।

बाहर न सब दिखाइ द रही थी, न दमदानभूमि, न आश्रम के अन्तर्भाग
वाली बगिया । दिखाइ देते थे चारों ओर सिर्फ बर्फाले तूपान के धुध भरी तेज
हवाओं के झोंक ।

मानो तूपान ने यूग को देख लिया । उसे डराने का अपनी क्षमता पर
विश्वास करके वह और जोर से सांय-सांय करन लगा । यूग क ध्यान को अपनी
ओर आकर्षित करने का बन् हरबन्द कोशिश कर रहा था ।

दोन बर्फ की तरंगे जार से आकाश का ओर उठनीं, छा जातीं, फिर
उतनी ही तीव्र गति से नीचे गिगती हुड दिखाइ नीं और धरता का मुन् मफेन्
पक क देनी । धुधिवी पर तूपान का एक छत्र माप्राजय था । उसका मुकाराल
करने वाग बर्नी कोइ न था ।

खिडकी से नीचे उतरने ही यूग की पन्नी दूछा य हुड कि यह कपडे
पन्न कर बाहर भाग जाय और बुड न बुड कन्ना पुरू कर द । उसे डर था
कि गोभियों क पीषा पर बफ इम तरह छा जायगा कि कोइ उह निवाल नही
पायेगा । दूमी तरह गुले मदान म दफन का हुड उसका मा जेगसी से जमीन म
और गन्दी धूम जायगी—और उसमे दूर होती जायगी ।

एक गर कि उसका आंग भर आउ उसका मामा उठ बैठा । इमा का
बहानिया मुना कर वह उसे सातवना देने की कोशिश करन ग्या । अहाइ
लेकर अयमनरस मा मामा खिडका क पाम तक गदा हो गया ।
दोनों कपडे पहनने लगे । गुबह हो रही थी ।

३

जब तक उमका माँ जीवित थी, यूरा का मालूम नहीं था कि उमक पिता ने बहुत अर्धे पन्ने ही उरु छोड़ दिया है। वह साइबेरिया में वेदयागमन और शारा के नशे में धुल पड़ा रहता। यूरा को यह भी मालूम न था कि लाखों रुपया की जायदाद उमक पिता ने इन्हीं सब कामों में उका दी थी। उस हमेशा यकी कहा जाता था कि उसका पिता व्यवसाय के सिलसिले में पीतसंग या किसी बड़े मेले में (विशेष कर इक्विट क) गया है।

उमकी माँ गुरू से ही कमजोर थी। बाद में उस शय हो गया। दक्षिणी प्रांत अधरा उत्तरी ग्नी में वह इलाज करवाने के लिए अस्मर गया करती था। उसका इन यात्राओं में यूरा दो बार उसके साथ था। अस्मर उसे अपरिचित लोगों के पास छोड़ दिया जाता था। एक अजनबी से दूसरे अजनबी के पास रहने का वह आदी हो गया था। फिर रहस्य से आच्छादित इस तरह की अमानान्य घृष्टभूमिक कारण और हर रोज के परिवर्तनों से वह इतना अभ्यस्त हो गया था कि उसे अपने पिता का अनुपस्थिति से काइ आर्य नहीं होता था।

उस अपने बचपन के वे दिन याद आ जाते जब वह विभिन्न उपकरण उमके जाति नाम से पुकारे जाते थे। जिवागो कैक्टरियों थीं, जिवागो बैक थे, जिवागो भवन थे जिवागो टाइपिन थीं—यही तक कि एक विशेष प्रकार की कूट का नाम भी जिवागो-वैन विख्यात हो गया था। एक समय ऐसा भी था कि मास्को के किसी भा ग्ले-गाड़ीवाले को सिर्फ इतना ही कहते—‘जिवागो क यहा तो वह अपनी हल में रिठा कर इस दुनिया में परे का किमी और ही जादुभरी नगरी में आपको पहुंचा देता। ठीक उसी तरह जिन तरह आप उसे कह—टिन्कटू चलो। उस क्षेत्र में जाते हा बड़े बड़े बाग गांवा की शांति का सुराद आभास होते। पर-वृक्षा का बड़ा-बड़ी डालियों पर कौंच जब बैठते तो हकीमी की बर्फ जमान पर गिरने लगती। उनकी कांच काव इधन की लफड़ियों के तोड़ने की आवाज का तरह सुनाई देती। दूर अधकार में जब रोशनी चमकने लगती, तब अपने घरों से कुत्ते खुले मदान में आ जाते।

एकाएक सब कुछ विन्हीन हो गया। वे गरीब हो गए।

४

मा की मृत्यु के दो मास बाद मद्र १९०३ ग्राफ्त की गर्मियों में एक दिन

पाच घंटे की एक्सप्रेस

यूरा अपने मामा कोल्या क साथ दो घोड़ोंवाला खुली गाडा म नवान नवानो विच बोस्कोगोयनिकोव नामक अध्यापक से मिलन क लिए कोलोप्रावोव की जागीर मं दुप्लाना की ओर जा रहा था। दान दवानोपच बोस्कोगोय निकोव प्रचलित स्कूली किताबों का लेखक था। कोलोप्रावोव रंग बनान क कारखान का मालिक था, और वह कला का कददा भी माना जाता था।

उम दिन 'कजान की कुवारी' का त्यौहार था। फसल लहलहा रही थी। शायद दो पहर होने क कारण, अथवा त्योहार क कारण रास्त म मिल कुल सजाटा था। अकट्टी फसल क खेत आधे बाल-कट कैदियों की तरह धूप मं तिलमिला रहे थे। सर पर विडिया चक्र काट रही थी। फल हुए धान की बाल तन कर सीधी खड़ी थी।

रास्ते के उम पार भी फसल क ऊपरी कटे हुए हिस्से सिर तान खड़े थे। दूर से ध्यानपूर्वक देखने पर लगता कि मानो वं मघर गति से हिल रहे हों जैम ऊपर फले हुए आकाश की ओर देखते हुए मावधान भूमि-तिरीधकों की तरह नोट्स तैयार करन म व्यस्त हों।

पावेल से निकोलाय निकोलावविच न पूछा - ये खेत जमादारों क ह या पानों के ?

पावेल प्रकाशक मग्नेदय का पीर उबर्ची भिदली-खर मनी कुठ था। यह गालक के स्थान पर बैठा हुआ था। वूड निकाल कर और टागे तिछा करक अपनी लापरवाही से वह यह सिद्ध करना चाहता था कि दरअसल गाड़ा चलाना उसका काम नहीं है। उरान विरक भाव से नवान दिया -- ये जमादारों के हैं।

उमने अपना पागप निकाला, जलाया और एक-दो कप लेसर उनका दूसरी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उमने कहा -- ये हमार हैं।
—चलोत्री, तेनी से चलो, उमन घोड़ों से कहा। घोडा की पूछ और पीठ पर उमकी निगाह ठीक वैसी ही थी जिम प्रकार इजिन डाइवर की इजन के अनेक कल-पुत्रों पर होनी है। लेकिन घोड़े तो आविर घोड़े ही ठहरे। एक घोडा कभी अपनी चाल तेज करके दौड़ने लगना तो दूसरा हम की तरह गान से गिर हिला कर कुठ एमा जाहिर करता मानो उमका काम तो मात्र घोभा बनाना ही है और जैसे टापा और गले म बजनेवाली घण्टी का मुर मिलाना ही उसका विशेष उत्तरदायित्व है।

निकोलाय निकोलायविच अपने साथ बोस्कोवोयनिकोव क भूमिमन्बधी मंगला पर लिखी गयी पुस्तक क प्फ लाया था। बड़े हुए मैमरशिप क कठिन कायदा का ख्याल रखते हुए पुस्तक को एक बार फिर से देखने क त्रिय प्रका शरु न आग्रह किया था।

उमने पावल से कहा -यहा लोग काफी उपद्रवी हो रहे हैं ? सुना है एक -यापारी का गला काट डाला गया और गांव क मामला स सम्बंधित एक सरकारी अफसर का साग खेन जला डाला गया ? इन मत्रक बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ? तुम्हारे गांव वाल इम बारे में क्या कहत हैं ?

पायेठ का दृष्टिकाण प्रत्यक्ष रूप में समर से भी अधिक अस्पष्ट था। वह चाहता था कि बोस्कोवोयनिकोव अपन दृषि-सम्बधी अडिग विचारा को मर्यादित करे।

—आप उनसे किम बात की अपेक्षा रखत हैं ? अब किमान बालू से बाहर हैं। उनसे साथ चरन से ज्यादा अच्छा व्यवहार हुआ है। जतना अच्छा व्यवहार हम लोगों का रिगाइन क लिए पर्याप्त है। हर किमान क हाथ में यमा दीजिए एक रस्सा और फिर देखिय हम एक दूसरे क गले में किम तरह फांसी लगा दत ह। —चल रे—रल—चली चल।

मामा क साथ दुफ्याका जान का घुरा का यह दूसरा मौना था। उसका ख्याल था कि वह रास्ता जानता ह। आगे चार पीछे फला हुइ जगल की धूमिल ख्याआ को देखकर हर बार वह माचता कि रास्ता दाहिनी ओर मुक जायगा और कोलाग्रियोव जागीर दिग्नाइ तन गेगी। चहा दस माल तक फैला हुआ गुला मदान हागा नही न रहै हागी और उमने पार रेल्व लाइन होगी। मगर हर बार उमका अदाज गलन सिद्ध हाता। मदान आत और जगलों की विशाल कोण में समा जात। एक क बाद एक आन गल इन दृश्या का लक्षक यात्रियों क मन में निगालना का भावना का उदय होन लगता और वे भावष्य क बारे में सोचने हुए रवात में डूब से जात।

जिन पुस्तकों में निकोलाय निकोलायविच का बारे में जतना प्रामद्व कर दिया था, वे जरी तक लिखी नहा गयी थीं। हालाकि उसक प्रसार परिपक्व हो चुक थे। फिर भी उम मालूम नग था कि वह सफलता क इतना करीब आ चुका है।

पाच बजे की एन्सम्प्रेस

शीघ्र ही अपन जमाने के लेखकों में बढ़ अपना निष्पि स्थान प्राप्त करनेवाला था। क्रांतिकारी आन्दोलन के समय के दार्शनिकों और विश्वविद्यालय के प्रोफेसरो के समक्ष होन पर नी उनके साथ, उनके रहन सहन और विचारादि के साथ उसका कोई मेल न था, विवाय पारिभाषिक शब्दा का एफना के। जिना किसी अपवाद के व मभा किसी न किसी बात अथवा तत्रत्रिणोप का चर्चा में शब्दा के हेर फेर अथवा उसका बाहरी रूप रखा का बात करके सनोप कर लेते थे। लेफिन निकोलाय पादरी होन के साथ क्रांतिकारा तथा आदर्शवादी टालस्टाय का अनुयायी दोनों ही था, और अपन मत पर टू था। वह किसी एक विचारधारा के पीछे पकता, प्रेरित होता और उस पर मग्न रहता, ताकि उसे स्पष्ट मार्ग दिखाइ दे और सवार अधिक श्रेष्ठ सुन्दर बन। उसक मतानुसार ये सिद्धान्त इतन मरल और सर्वव्यापी होन चाहिए कि वे जिना के का नी समझ में आ सक अथवा जिना जब भरत को नी त्रिपला के प्रकाश का तरह स्पष्ट दिखाइ दे सक। ऐसी जिना नूतन विचारधारा उनके मन में टपना-पूर्वक जड़ जमा रहा थी।

यूरा को अपन मामा के साथ रहना बहुत पसन्द था। उसस यूरा का अपनी मा का याद आ जाती। मा का तरह ही मामा का मन्मिष्क स्वतंत्रता प्रेमी था। जिना भी प्रकार का अपरिचित वातावरण उमरे लिए अनुकूल सिद्ध होता था। मभा प्राणियों में समानभाव से देखने का सौन्दर्य पूणः श्रि और मस्त स्वभाव ठीक माँ का हा तरह उसका भी था। मा का तरह ही मामा जिना वस्तु का तब एक ही नजर में समझ सकता था और जिना भा विचार को, उमके समाप्त होने से पहले ठीक तरीक से अभिव्यक्त कर सकता था।

मामा के साथ दुपल्याका ज्ञाते समय यूरा को बड़ा खुशी हो रही था। बहुत ही खूबसूरत गृह था। स्वयं भा उस अपनी माँ का याद ताजा हो ती था। मा को भा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति उज्ञा चाय था और न यूरा को स्वयं अपन साथ गाँवों की ओर ले आया करती थी।

निका डुडारोव से मिलन के लिए भा यूरा आतुर था। निका उसमें दोष बड़ा था। वह शब्द यूरा को निरस्वार का दृष्टि से हा देगता था। वास्को थोरानिकोव के यहाँ रहने वाला वह एक स्कूल का विद्यार्थी था। उमने जब यूरा

के साथ हाथ मिलाया तो उसके माथ के बाल ललाट पर लटक आय और उसका आधा चहरा उमम ठिप गया। पूरा नाकन क साथ उमन यूरा का हाथ, हाथ मिलाते समय झटक दिया।

५

सशोधित पाण्डुलिपि पन्ते हुए निकोलाय निकोलायविच न कहा -गरीपी का समस्या का जड़।

--गूल जड़ कहिये मन्नाशय। भरे रयाल म थह अधिक ठीक होगा।
--इवान इवानोविच न प्लफ सशोधित करते हुए कहा।

आधे अघकार स डके हुए वरामद के एक हिस्म म वे काम कर रहे थे। कुदाल फावड़ा आदि बगीच का सामान पास ही पड़ा था। एक ओर दूटी हुई कुर्मी पर एक बरमाती को लटक रहा था। काचड़ स सने हुए बरसाती जूते एक कोने म उलट पड़े थे। उनम से पानी चूरहा था।

निकोलाय निकोलायावेच न लिखाया - दूसरी ओर ज म-मृत्यु क आंकड़े माहित करते हैं

--'विचाराधीन बय क अन्तगत। --यह भी जोड़ लीजिये --इवान इवानोविच ने कापी म नोट करत हुए बड़ा। थोड़ा दर तक निस्त-धता छा गया। प्रनाइट के टुकड़े कागजों पर रख दिय गय, ताकि वे उड़ न जाय।

काम खत्म होते ही निकोलाय निकोलायावेच जान क लिय तयार हा गय। बोला -तूफान आनवाला है। चलना चाहिए।

-जोड़ बात नहा। म जान नहा दूगा। अर हम चाय पीयंगे।
-लकिन मुझे सन्धा से पहले शहर अररय पहुच जाना चाहिए।
-उहम करना व्यथ है। म मानूगा हा नहीं।

तम्बाकू की मिला-जुली गध क साथ बगीच म धूआ फैला हुआ था। चाय तयार था। नौकरानी एक बड़ा सी टे म मक्खन, कक आर कुछ फल ल आइ। मालम हुआ। क पावठ घोड़ा क साथ नदी म स्नान करन गया हुआ है। निकोलाय निकोलायविच क पास मिवाय एक जान क कोई उपाय नहीं था।

इवान इवानोविच न प्रस्ताव रखा -जब तक चाय तयार हो रही है, चलो नदी तक घूम आव।

कोलोप्रिवाव की मित्रता के बल पर उमने मेनेजर के दो कमरों पर कब्जा जमा लिया था। बग़ाच के एक कोने में, छोटी सी धगिया में, उसका रहने का स्थान था। उसका पाम से हा पुगना रास्ता सुजगता था। जहा पर काफी घाम ऊग आइ थी और जिमका सिवाय मैले की गाडिया खग करन के, अब कोइ उपयोग नहीं हाता था। परिणाम स्वरूप नाली का कूडा-कचरा फकने का वह स्थान बन गया था।

लक्ष्मापति कोलोप्रिवाव के विचार काफी उदार थे। क्रांतिकारियों का वह पक्षपाती था। अपनी पनी के साथ इम समय वह कर्मी बाहर-गाव गया हुआ था। कुछ नौकरों और अपनी दान्यों के साथ उमड़ी लडकिया, लीपा और नादिया, उसी मकान में रह रही थीं।

मनेजर के रहन के स्थान और नकली झाल तथा लान से सुशोभित इस मकान के बीच ब्लेक-हार्न की बाइ-सी लगी हुई थी। जैसे हा के दोनों बाइ के करीब पहुंच गोरैया का झुंड पुर्ति से उड गया। ब्लेक-हार्न के काट उन दोना के शरीर पर चिपक गये थे और उनकी गपशप अगाध रूप से प्रवाहित थी।

पुरान भवन के पथरों के पीले, माली के रहन का स्थान और कोमल बनस्पतियों को गम रखने वाले शीश के छोटे मकानों को वे पार कर गये। साहित्यिक महारथियों में प्रतिभाशाला लोगों की नई धारा के विषय में वे बात चीत कर रहे थे।

निकोलाय निकोलोविच ने कहा -प्रतिभाशाली लोग सुलभ हैं जकर मगर अपवाद रूप में। वे अपने में ही मस्त रहते हैं। कृत्र और मोहाइतिया तो आजकल पैगन की तरह हर जग में बन रही ह। जहा भी लोग एकत्रित होत हैं उनमें उदासीनता के बिह ही दृष्टिगोचर हाते हैं-चाहे मोलोयय के प्रति बफादार लोग का समुदाय हो चाहे कान्त या मार्कम के प्रति बफादार लोगो का दल। मन्व-गोध ता सिफ व्यक्तिगत रूप से संभव है। और जिनका मय-शोध के प्रति धनना आग्रह नहीं है, उनसे इम तरह के प्रतिभाशाली व्यक्ति-वादी लोग अलग-मे हो जाते हैं। दरअसल समाज में हैं ही किननी चीजें-जिनके प्रति हम बफादार रह सकें? ज्ञास्त्व में बहुत कम। चिर-मादस्त-यह उपमा ही जीवन के त्रिय अधिक साथक है--प्रत्येक को इसी पर विश्वास करना

चाहिए। प्रत्येक को मम-मसीह के प्रति मन्ना रहना चाहिए-अनश्वरता व प्रति इमानदार रहना चाहिए।

मरे प्यार भाई, शायद तुम बुग मान गये। मने जो कुछ कहा तुम उमम से एक भी शब्द नहीं समझे।

-हु २ इमान इवानोविच न प्रत्युत्तर में हुकार भरी। श्वान दुमला-पतला चंचल स्वभाव का युवक था। अपनी छोटी दाढ़ी और खुम्भुरत बालों के कारण वह लिवन के समय का अमोरकन लगता था। अपनी दाढ़ी को महलाने और उमकी नोक के माथ खेलत गहन की उसकी आदत थी। उमन कहा -वास्तव मम कुछ नहीं कहता। तुम्हें तो मालूम हा है कि इन बातों के प्रति मरा दुमरा हा दृष्टिकोण है। मर तर रात चल ही निकली है तो पूछता ह कि जिम दिन तुम्ह धर्मगुरु के पद से अलग कर दिया गया उस दिन तुम्हारे मन पर क्या बीती? तुम्ह निश्चित रूप से दुरत हुआ होगा-यह म शत लगा कर कट सकता ह। उन लोगों न तुम्हारी काफी निन्दा की होगी?

---तुम विषय बदलन का कोशिश कर रहे हो। फिर भी नहीं, उहान मुझ पर धाप नहीं बरमाये। आजकल किसी को ध्राप दिया नहीं जाता। कुछ कटु लगनवाली बातें अवश्य हो गया और परिणाम-जनित घटनाएं भी। उदा हरण के लिए मुझे कई वर्षों के लिए अभैतिक नौकरी से बचित कर दिया गया ह। मास्को और पीट्सबर्ग म मरा प्रयाग-निषिद्ध है। लेकिन ये मन छोटी बात है। म कह रहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह के प्रति इमानदार रहना चाहिए। मे उस स्पष्ट रूप से समजाता हू। जिम बात का तुम नहीं समझ पा रह हा-यह यत् है कि नास्तिक होना मभव है। बहुत सरलता से तुम यह मान मन्त हो कि इतर म अस्तित्व है ही नहीं। और परमात्मा का अस्तित्व हाना जरूरी भी क्या है? फिर भी यह विद्वान ता कर्त हा हा कि मनुष्य प्राकृतिक नियमानुगत नर्त गहता वकि वह प्रगतिहासिक रचना है। इतिहास-और नतिहास वह है जो मसीह के मम न प्रारभ हुआ। मसीह-जाणी द्वारा यह प्रस्थापित हुआ। आखिर इतिहास क्या है? मृत्यु की रहस्या-उल्ल पहेली के लिए गनाबिद्यों से चली आ रही मनुष्य की सतत चेग ही तो इतिहास का प्रारभ है। इन मकल चेगभा का उध है मृत्यु पर विजय। मसीहिए गोग

सामगान उभरते हैं, इसीलिए वे गणित शास्त्र की असीमता का खोज करते हैं, इसीलिए विद्युत्चुम्बकीय लहरों का खोज करते हैं। इस दिशा में त्रिना आत्मा का प्रेरणा पाथ अधिक प्रगत का नहा जा सकती। त्रिना आध्यात्मिक साधना के इस प्रकार का आवेपण-अनुसंधान नहा किया जा सकता। इसीलिए मसीह ने अपनी उपदेश-वाणी में प्रत्येक आवश्यक निर्देशन दिया है। और यह सच क्या है?—पत्नी बात है अपने पक्षी के प्रति प्रेम—यह जीवित शक्ति का उच्चतम परिष्कृत स्वरूप है। मनुष्य के हृदय में यदि एक बार यह भावना समा सका तो अनन्त ब्रह्म अगाध गति से प्रवाहित होनी रहेगी।

आधुनिक मनुष्य की रचना में दो विचारधाराएँ प्रमुख हैं, जिनके त्रिना उसका व्यक्तित्व अकल्पनाय है। सुख व्यक्तित्व तथा जीवन का धारणा को ही लागू माना जाता है। मजे का बात यह है कि यह मंत्र अभी तक पूनया नवीन विचारधारा है। मार्विनिक सृष्टि में इस पद्धति का कोई इतिहास नहा है। तुम्हें स्वयं मिलेगा मनुष्यहित रक्षण, पारिविकता और जगत् का अस्मिन् दाग। किसी भी रूप में जो मनुष्य को गुलाम बनाता है वह निम्न रूप में निरूपित मोटि का व्यक्ति है। प्रस्तुत इतिहास में तुम्हें मिलेगी मत्त घमण्ट भरी अक्षयता का प्रतीक कामे का प्रतिमाण तथा सगमरम के कातिस्लम्भ। इना-मसीह के उद्भव से पहले आदमा स्वतंत्रापूजक मान नहीं ले पाया था। इसके बाद ही आदमा नगना रूप में, गर्जों में कुत्तों का तरह मरने के पनाय घर में आदमी का तरह मरने लगा था। मरने का वशसृष्टि हुई। अपने स्वयंके कार्यभार में मनुष्य जातन का मतन चष्टा में मनुष्य ने अपने आपको समर्पित कर दिया। उष् में पत्नीन से तर हो गया है। गायद मैं हीवाग के यामने व्यथ सिर टकरा रहा है?

--यह गहग आत्मविन्मन है भल आदमी। यह मुझे हजम नहा होना। डाक्टरों ने मय निषिद्ध कर मय है।

--ओ, अच्छी बात है। छोड़ो मय। तुम मिलकुल बेकार के आदमा हो। दुष् भी भाग्यवान होत हैं। मया यह जिनना खूबमूरत दृश्य है? मग म्याल है कि मने मरके निकटतम उम्पक में रह के भी तुमने इस सुन्दरता की ओर कभी नहीं देखा।

सूर्यकिरणों में नदी की लहरा चमक रही थी। उमक तेज प्रकाश में आख चौधिया जाता थी। नदी की लहरा में सलवटें पड़तीं, मुझाव आते ओर फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बड़ा नाव में घोड़, गादियां, किवान और उनकी खिया उस पार जान के लिए खाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा — देखो इस समय पांच बज रहे हैं। रिजरान से आनेवाली एकमप्रेस पांच बज कर पांच मिनट पर यहाँ से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुए नीले पीले रंग की गाड़ा दाहिनी ओर से आती हुई बहुत ही छोटे आकार में दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि एकमप्रेस अचानक रुक गयी है। इजन के ऊपर से उड़नेवाले धूएँ के सफेद बादल दिखाई दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से सावधान बगनवाली सीटी की आवाज सुनाई दी।

वास्कोवोयनिकोव ने कहा — यह अद्भुत बात है।

— कुछ गडगड जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ा के इस प्रकार रुके हो जान का कोई साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुई है।

— चलो, चल कर चाय पीय।

६

निस्की न घर में मिला न बगीचे में ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बराम्द में बंठ काम कर रहे थे। निस्की, रूढ़ रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निस्की उसे अपन समान नहीं मानता और महमानों से तग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह बहुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का ध्रुव पश्चा अपन सुरीले कठ में तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता, ताकि उसकी मधुर लचीला और स्पष्ट आवाज गाँव के अणु रेणु में व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूल की सुगंध अपन मूलस्थान डठला में अचंचल भाव से पड़ा थी। यूरा को इन सबने एंटिस और बोडिचेरा की याद दिला दी। वह इधर उधर घूमता रहा। मारे बगीचे में से उसे अपनी मा की आवाज का प्रेम वानों के समीप सुनाई देने लगा। मधुमक्खिया की मिनभिनाहट में, चिड़ियों की संगीत

मय चहचहाहट म भी मां का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मा उसे चर्चाशाओं से पुकार रही है—उसे अपने पाम बुला रही है। कभी जम ओर से पुकारन की आवाज आती, कभी जम ओर से। मानो वट उमका जवाब सुनने क लिए व्याकुल हो। उस भ्रम से वह काप मा उठा।

नीचे से उलझी हुई और तिर्रे से लटकती हुई यादियों को पार कर वह पानी की नाला की ओर बग। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचर में सीपन था अपेरा था। सचित्र बाइबिल में चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले टठलों की सख्या अधिक और फूलों की तादाद कम थी।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक हनीमाहित महसूस करन लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो गेगा। वह घुटनों क बल बैठ गया। उमकी आंखों से आंम बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की—हे मेरे पतिर सरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सय का माथा बना कर मां से कह दो कि म विलगुल ठीक हू। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु क घाद भी जावन है तो हे प्रभु, जसे स्वर्ग में अगीकार करना, जहाँ मर्तों का सुखद मसुग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकशिन साधन जाय सुलभ है। मेरी मा इतनी अच्छी था कि व पापात्मा हो हा नहीं सकनी। उसे दया-दान दो, और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सन्ताप मन दो। मां—। श्रपियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के माथ मानों उसने अपना मा को घग्ती पर बुला लिया और अब वह जम विशिष्ट कष्टूरित अवस्था को बदास्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पडा।

आधक टेर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आजा, उमने सुना कि उमके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर दकर वह नाली से ऊपर चपन लगा। अचानक उस याद आया कि उमने अपने खोय हुए पिता के लिए तो भगवान से प्राथना का हा नहीं, जैसा कि उमकी मा ने उसे सिखाया था।

थोडा दर का इस मूर्छा ने उस हल्का कर दिया था। होश में आने के घाद वह इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने मोचा—पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्राथना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे थोड़ी

सूर्यकिरणों में नदी की जलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश में आग चौंधिया जाता था। नदी की लहरों में सलबटे पड़तीं, मुझव आत ओर फिर अचानक सब कुछ विन्मन हो जाता।

एक बड़ा नाव में घाड़े गाड़िया, क्पान और उनकी खिया उस पार जाने के लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा — देखो इस समय पांच बज रह हैं। खिजरान से आनवाना एकमप्रेस पांच बज कर पांच मिनट पर यहां से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुए नीले पीले रंग की गाड़ा दाहिनी ओर से आती हुई बहुत ही छाट भावार में दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि एकमप्रेस अचानक रुक गयी है। इजन के ऊपर से उड़नवाले धूएँ क सपेद बादल दिखाई दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से भावधान कग्नेवाली सीटी की आवाज सुनाई दी।

वास्कोनोयनिकोव ने कहा — यह अद्भुत बात है।

— कुछ गडबड जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ी के इस प्रकार खड हो जाने का कोई साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुई है।

— चलो, चल कर चाय पीय।

६

निफी न घर में मिला न बगीचे में ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बराम्द में बैठे काम कर रहे थे। निन्द्रेय रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निफी उस अपन समान नहीं मानता और महमाना से तग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह बहुत बढिया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का प्रश पभा अपन सुरीले षठ में तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता ताकि उसकी मधुर लचाली और स्पष्ट आवाज गांव के अणु रेणु में व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगंध अपन मूलस्थान डठला में अचंचल भाव से पडा थी। यूरा को इन मरने एटिस और बोडिगेग की याद दिग दी। वह इधर उधर घूमता रहा। मारे गगीय में से उसे अपनी मां की आवाज का प्रम कानों के

— धुमकिरिया की मिनभिनाहट में चिड़िया की संगीत

मय चढ़चढ़ाहट में भी मां का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मां उसे चतुर्दशाओं से पुकार रही हैं—उसे अपने पाम बुला रही हैं। कभी इम ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उम ओर से। मानो वह उमका तवाच मुनने के लिए व्याकुल हो। दस भ्रम से वह काप मा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिरे से लटकती हुई झाड़ियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर बग। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचर में सीलन थी, अधेरा था। मन्त्रि वाइविल म चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले डठलों की सट्या अधिक और फूलों की तादाद कम था।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक हतोन्माहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो रेगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की—हे मेरे पवित्र सरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सत्य का माधी बना कर मां मे कह दो कि मैं बिलकुल ठीक हू। वह चिंता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु, उसे स्वर्ग में अगीकार करना, जहाँ मर्तों का सुखद सत्संग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकाशित साधन 'याय सुलभ है। मेरी मां इतनी अच्छी था कि वह पापात्मा हो ही नहीं सकती। उसे दया-दान दो और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सत्ताप मत दो। मां—। श्रुतियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानों उसने अपना मां को धरती पर बुला लिया और जब वह इम विचित्र कष्टुरित अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक देर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने मुना कि उमक मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रयुक्त देकर वह नाली में ऊपर चढ़ने लगा। अज्ञानक उसे याद आया कि उसने अपने खोय हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना का ही नहीं जैसा कि उसका मा न उसे सिखाया था।

घोड़ा दर का इम मूर्छा ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इम ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा—पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खाम फर्क नहीं पड़ेगा। वे घोड़ी

सूर्यकिरणों में नदी की जलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश में आखं चौंधिया जाता था। नदी की लहरों में सलबटें पड़तीं, मुड़ाव भाते ओर फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बड़ा नाव में घोड़े, गाड़िया, फिपान और उनकी स्त्रियां उस पार जाने के लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा — देखो इस समय पांच बज रहे हैं। खिजरान से आनेवाली एकमप्रेस पांच बज कर पांच मिनट पर यहां से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुए नीले पीले रंग की गाड़ा दाहिनी ओर से आती हुई बहुत ही छाट आकार में दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि एकमप्रेस अचानक रुक गयी है। जन के ऊपर से उड़नवाले धूल के सफेद बादल दिखाई दिए। कुछ ही क्षणों के बाद रतारे से सावधान करनेवाली सीटी की आवाज सुनाई दी।

वास्कोनोयनिकोव ने कहा — यह अद्भुत बात है।

— कुछ गड़गड़ जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ा के इस प्रकार खड़े हो जाने का कोई साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुई है।

— चलो चल कर चाय पीय।

६

निकी ने घर में मिला न बगीचे में ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बराम्दे में बैठ काम कर रहे थे। निरुद्धेय रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निकी उसे अपने समान नहीं मानता और महमाना से तग आकर बच नहीं छिप गया है।

यह बहुत बड़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का धस पश्चा अपने मुरीले कठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता, तब उसकी मधुर, लचीली और स्पष्ट आवाज गाय के अणु रेणु में व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगंध अपने मूलस्थान डठलों में अचञ्चल भाव से पश थी। यूरा को इन सने एन्स और बोर्डिघेरा की याद दिला थी। वह धर उधर घूमता रहा। सारे बगीचे में से उस अपनी मा की आवाज का भ्रम कानों के समीप सुनाई देने लगा। मजुमकिमया की भिनभिनाहट में, चिड़ियों की संगीत

मय बहबहादुर में भी मां का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मां उसे चतुर्दिशाओं से पुकार रही है—उसे अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उस ओर से। मानो वह उनका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो। इस भ्रम से वह काप मा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिर से टटकती हुई यादियों को पार कर वह पानी की नाला की ओर बग। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचर में सीलन था, अंधेरा था। मन्दित्र बाइबिल में चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले डटलों की सव्या अधिक और पृलों की नादाद कम था।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक मनोमाहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो गेगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की—हे मेरे पवित्र संरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सत्य का साक्षात्कार बना कर मां मे कहे दो कि मैं बिलकुल ठीक हूँ। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु—जैसे स्वर्ग में—अमीकार करना जहाँ मन्तों का सुखद मतसंग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकृति साधन—याय सुख है। मेरी मां इतनी अ—ठी थी कि वह पापा—मा हो हा नहीं सकती। उसे दया—दान दो और कृपा अर उसे किसी प्रकार का मन्ताप मन दो। मां—।' अपियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानों उसने अपना मा को धरती पर बुला लिया और जय वह इस विचित्र कण्ठरित अवस्था को बदलाव नहीं कर सके तो मूर्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक दूर तक वह अचल नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर कर वह नाली से ऊपर चढ़ने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोये हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना का हा नहीं, जैसा कि उसके मा न उसे सिखाया था।

योषा दर का इस मूर्ग ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा—पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे धोही

देर रुक कर इन्तजार भी कर सकते हैं। यूग न मचमुच अपने पिता का कती याद किया भी नहीं।

७

ओरनबर्ग के एक वकील का लड़का मिशा गोडन अपने पिता के साथ सफ़र-क्लाम के डिब्बे में सफ़र कर रहा था। नदी पार के मैदान में उनका गाड़ा खड़ा हो गयी थी। गम्भीर चरुर वाला मिशा ग्यारह साल का लड़का था। उसका आंग बड़ा-बड़ी थी और उनमें गहराई थी। वह अपना स्कूल के द्वितीय वर्ग में था। उसका पिता जोसिपोव्च गोर्न का तरादला मास्को में एक नये पद पर हो गया था। मकान आदि भी खर्च करके कृष्ण-उमरी में और बहिन पत्ने ही पहुँच गयी थी।

मिशा और उसके पिताभी तीन दिन से सफ़र कर रहे थे। सूर्य का गर्मी से चून की तरह सफ़ेद दिग्गड़ के नीचे धूल भरे गमगादलों से आच्छादित कम के खेत गाँव कच्चे और घाम भरे मैदान उनका सामने से गुजर गये। रेणु का लेवल-कॉमिंग के बाहर सड़क के किनारे गाड़ियाँ का कतारे लगी हुई थी। भय कर तेजी के साथ आनवाली गाड़ी के कारण कतारवाला ये गाड़ियाँ निश्चय रूप से खड़ी थीं और छोड़े मचगता से घड़ियाँ गिन रह थीं।

उड़ा स्टेशनों पर मुसाफिर फुर्ति से डिब्बा से कूद कर बाहर निकल आते और खाने पीने के सामान की खोज में इधर-धर फल खाते। अस्तगामा सूर्य की रश्मियों ने ज्योहि स्टेशन के पिछले भाग में शारा किया मुसाफिर भाग कर गाड़ी में बैठ गये और गाड़ी के पहिये चल दिये।

सफ़र की ममस्त हलचलों पर यदि अलग-अलग रूप में विचार किया जाय तो ये के की गभीर और मुनिजित दिखाई देगी। लेकिन यदि उसे अविभाज्य रूप से देखा जाय तो लगेगा कि जीवन प्रवाह का आकठ रस पीकर ये सबको अपने साथ एकत्रित करके बहाये लिये जा रहा है। लोगों ने काम और मर्घ्य किया है-अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और चिन्ताओं के कारण। यद्यपि उन्हें इसके लिए बाध्य किया गया है-फिर भी कर्म की यह प्रेरणा पतनो-मुग होकर कमी की ममात हो जाती यदि उन पर मचग ममप्रता का अनुभूति का निगाह, सीमाहीन उदासीनता की कड़ी मचर, न होती। मानवीय जीवन के गुथन और

जिनके एक दूसरे में मिश्रित होना के सुगम आश्वासन के कारण यह अनुभूति मानना बन कर मनुष्य में प्रस्थापित हुई।

मृत्यु लोभ में जो कुछ घटित हो रहा है वह कहीं किसी दूसरे स्तर पर भी घटित हो रहा है इस विश्वास को ही कुछ लोग इश्वरीय भक्ता के रूप में मानते हैं। कुछ लोग उसे इतिहास कहते हैं। कुछ लोग उसे किसी और नाम से पुकारते हैं।

मिश्रा अपने आपको इस माधारण नियम का लुभंगपूर्ण अपवाद समझता था। उसकी प्रगति और मुक्ति, नमार के माधारण लोगों की उदासीनता के बजाय अपनी यशता के कारण ही हुई था। अपने आम-चेतना का अपनी विरामत के बारे में उसे मालूम था। इसमें वह दुखित भी था, विक्षुब्ध भी।

ठीक उसी तरह के हाथ-पाव वाला, एक हा भापा बोलनवाला और एक हा जारन-पद्धति का प्रत्येक व्यक्ति कितने भिन्न रूपों में है—मिश्रा का आश्चर्य कभी समाप्त न हो पाता। एक आदमी ऐसा है कि जिसे कोई पसन्द नहीं करता कोई प्यार नहीं करता। क्या एक आदमी दूसरे का अपने न पतित होने पर, उत्पत्ति का चेष्टा नहीं कर सकता? फिर ज्यू होने का अर्थ हा क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? दुख का कारण बननावाली इस मूक चुनौती का प्रतिफल क्या है और क्या है उसका माथकना।

जब कभी मैं अपने पिता के साथ इन समस्याओं का चिकित्सा देता तो उसे यहाँ तक मिलना कि ये सब व्यर्थ के प्रपञ्च हैं और तुम्हारे सवाल बेतुक हैं। तुम्हें इस तरह का विवाद नहीं करना चाहिए।' निश्चित रूप से घटित होने वाले भविष्य के प्रति मूक विनम्रता के लिए प्रेरित करनेवाला उसे कोई समाधान प्राप्त नहीं होता।

जिनके कारण हम उल्लस की मूर्ति हुए थी, उन तमाम लोगों की नजरों में धीरे धीरे मिश्रा निरस्कार का पात्र बन गया, सिवाय अपने माता-पिता की नजरों के। उसे निश्चित रूप से विश्वास हो गया कि जब वह बड़ा होगा तब वह इस सारी अव्यवस्था को ठीक कर देगा

उदाहरण के लिए, उसे कोई यह नहीं समझा सकता कि महाने के तालाब में रिंग-रोड से दूध पटने वाले व्यक्ति की तरह जब वह

उसके पिता को दूर हटा कर दरवाजा खोल कर, कोरीनोर से भागते हुए मर के बल चलती गाथा से बूढ़ पडा, तो उमरे पिता को गाडी रोकन की चेष्टा नहीं कर्नी चाहिए थी ।

बाफी अर्धे तक ट्रेन रुकी पन्ना रही । हकीकत यह थी कि त्रिगोरी ओसि पोविच ने हा जर्जर खींच कर गाथा रक्ता कर दी थी । अय सहयानियां का लगता था कि इस तरह गाडी का रुकी रहना, और विधुब्ध कर देने वाली परिस्थिति इस गोर्डन-परिवार न हा जानबूझ की है ।

निश्चित रूप से कोई नहीं जानता था कि क्यों इतना समय लग रहा है कुछ लोगों का कन्ना था कि अज्ञानक गाडी रोकन का कारण वायुसंचालित ब्रेक सराब हो गय है । कुछ लोगों का मत था कि चूंकि गाथा ऊँची चढ़ाई पर रुकी है, इस लिए एंजिन त्रिना अधिक जोर लगाय गाडी खींच नहीं सकता । तीमरा विचार था कि आत्महत्या करन वाले यत्ति के वकील ने, जो उसके माथ ही था अप्रह किया है कि समीपवर्ती थान से अधिकारी बुला लिये जाय ताकि पचनामा तैयार हो सके । सम्भवत इसीलिए ड्राइवर का साथी तार क रम्मे पर चर कर समाचार पटुचाने की व्यवस्था कर रहा था । निरीक्षण टूली अधिकारिया को लिये आ ही रही होगी ।

डिब्बे के पिछाडघर से लगभग यू डी कोन्गेन की गव की तरह तेज दुर्गंध आ रही थी । गंध तेल के धब्बा वाले कागज में लिपटे हुए तले हुए मुर्ग शाबकों की गंध भी वातावरण में फैल रही थी । कर्कश आवाज वाली आर हवा के कारण धूल-धूपरित पीटर्मर्ग की त्रियां कालिब्य और उबटन के सयोग से जिप्सियों के रूप में परिणित हो गयी थीं । वे अपने चेहरे पर पाउडर पोतने में और अगुलियों को रुमाल से पोतने में इस तरह व्यस्त थीं कि मानो कहीं कुछ हुआ ही न हो । हावभाव से मन्कती हुई जब वे अपन कंधे हिलाने की चेष्टा करनीं तो छोटा सा त्रिब्बा उनसे मानो माफी मागन लगता । वे गोर्डन क डिब्बे की ओर बनीं ।

मिशा को लगा कि उन त्रियों के सिउडे हुए होठों में से मद फुसफुसाहट आमपास के पौधों के बारे में चर्चा कर रही है कि हे भगवान, ये पौधे कितने नाजुक हैं । शायद ये पौधे सोच रहे होंगे कि उनकी सृष्टि विशेष रूप से की गई है । मच ये सत्र चतुर ह । यह सत्र इनके प्रति बड़ी भारी

आत्महत्या करने वाले व्यक्ति का शव नदी के किनारे घास पर पड़ा था। उनके मथे पर रक्त के काले दाग उभर आये थे। रक्त ही जनी हुई धाराएँ उनके मारे चेहर पर फैली हुई थीं। रक्त सृग्म का जम गया था। लगता था कि यह उस आदमी का खून नहीं है बल्कि भिन्न किम्म की कोई चीज है। जैसे मुलम्म के टुकड़े अथवा मिट्टी की रेखाएँ या जम बूझ जम के पत्ते।

बहुत मार सहानुभूति दर्शाने वाले लोग का झुण्ड शव को घेर हुए था। मृतक के पाम उद्विग्न और पिचारशून्य दृष्टि से देखते हुए जमका वकील और हमसफर पालन जानवर की तरफ खड़ा था। वह पशमीने की कमान पहने हुए था। हृष्टे कष्टे बलिष्ठ देह वाले उस व्यक्ति का चंद्ररा अभिमान से आप्लावित था। वह गर्मी से मग जा रहा था और अपने हट से हवा करन में व्यस्त था। किसी भी प्रश्न के उत्तर में धान काट कर बड़ कपड़े हिलाने हुए कहता - वट्ट शगमी था। जममे अत्रिक उमसे ऐम्मी का भी क्या जामकती थी?

एकआध बार एक दरली पनली बृद्धा जव के समीर गयी। वह ऊनी कपड़े पहने हुई थी और उसके हाथ में लैम का हमाल था। वह थी विपत्रा तिविरजिना। उसके दो लठके एजिन डूइवर थे। वह डमी गाडी में अपनी दोना बटुआ के साथ निगुल्क-आदेश-पत्र लिये तीवरे दन में यात्रा कर रहा। थी तिविरजिना के पीछे दो त्रिया चुपचाप इस तरह चल रही थीं जैसे धार्मिक-भित्थुणिया अपनी धर्म-दीक्षित श्रेष्ठ मानाओं के साथ चल रही हों। भीड़ में उनके लिए राक्षा दे दिया। तिविरजिना का पति एक रेल-दुर्घटना में जीविन जल कर मर गया था। वह शव से कुछ दूर खट्टे हो गयी जहां भीड़ में से वह उसे देख सकती थी। उगने कीर्ध-धाम ली मानों वह दो दुघटनाओं का तुलना कर रही हो। जैसे कह रही हो — प्रत्यक अपन भाग्यानुसार! कोई प्रभु का इच्छानुसार मृत्यु प्राप्त करता है और यह है दिल पर पत्थर या भार रग देनेवाली घटना, कि कोई अपने ऐर्ब्यसम्पत जिन्दगी में मतिभ्रम के कारण स्वयं मर जाय।

लगभग सभा यात्री डिब्बे में बाहर निकल आये थे। शव को एक नजर देखने के बाद वे अपन-अपन दिब्बों में लौट गये। उह उर था कि कहीं उनका सामान चोरी न खरा जाय। लाइन पर कूटने पर कुछ लोग आपपाम के फूल तोड़ने लगे और कुछ बँटे-पैठ तग आकर हाथ-पाव फैलाने के इरादे से

इधर उधर टहलने लगे। उन मनुको ऐसा लग रहा था कि यह सारा वातावरण इम तरह गाड़ी रोक देने के कारण ही उपरिधत हो गया है। यदि यहाँ गाड़ी खड़ी न कर दी गयी होती तो न यह दवा हुआ दलदल होना और न यह चौकी नदी। इम दुर्घटना के बिना न ये आस-पास के सुन्दर मकान होते और न टसरे किनारे पर चर्च ही।

जिन तरह समीप में ही चर रहे किसी झुंड में से एक गाय ने आकर इम भीड़ की ओर एक नजर देखा उसी तरह मध्याह्नकालन सूर्य रश्मियों का प्रकाश भी इम मृतक के शव पर उदासीन भाव से पड़ रहा था। शुद्ध रूप से यह एक स्थानीय स्पष्ट घोषणा थी, और घटनास्थल इम नाटकीय मंच का एक विशिष्ट भाग।

इस दुर्घटना से मिशा गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ था। दुख और अफसोस के भारे एक वारगी वह चीख ना उठा। मृतक व्यक्ति इस लम्बी यात्रा के दौरान में अनेक बार उसके पास उसके डिब्बे में आया था। वह घण्टों उसके पिता के साथ बातचीत करता रहा। वह कह रहा था कि शांति अनुमोहन और चारित्रिक-शुद्धता की बातों से उसे बड़ा परित्राण मिलता है। वह यह भी कहता था कि इन सबको वह अपने आप में खोजता रहा है। उसने उसके पिता से कई महत्वपूर्ण बातों के बारे में अतहीन सवाल पूछे थे। जैसे एकमचज के बिल समझौते की कार्यवाहा दिवालियेपन और पड़मंत्र सम्बन्धी कानून की मुख्य बातें। अत में उसने कहा था — खैर, मैं कभी यह न जान सका कि कानून इतना दयापूर्ण और विस्तृत है। मेरे वकील की तो इस बारे में बहुत बुरी धारणाएँ हैं।

जब इम आदर्मी का बोलने का उदमाह समाप्त हो जाता, तब पहले दर्जे से उसका हमसफर वकील उसे लेने चला आता और एक तरह से जबरदस्ती खींचकर उसे रेस्ट्रॉ कार में ले जाकर उसके लिए शराब की व्यवस्था कर देता।

यह हमसफर वही व्यक्ति था जो इस समय शव के पाम लापरवाही के साथ मड़ा था, जैसे इम मारी दुर्घटना में उसे कुठभा अथर्वजनक नहीं लग रहा हो। यह बात सही थी कि उसके मुवक्किल का अथक-सघष कुल मिलाकर उसके लिए लाभदायक ही सिद्ध हुआ।

मिशा के पिता ने उसे बताया कि आत्महत्या करनेवाला व्यक्ति सुप्रसिद्ध लक्ष्मीपति जिवागो था। स्वभाव उमका अच्छा था फिर भी था वह दुराचारी था। उसका आधा दिमाग खराब हो चुका था।

मिशा की उपस्थिति की परवाह न करते हुए वह व्यक्ति अपनी स्वर्गीय पत्नी और मिशा की उम के अपने लडके के बारे में बातें कर रहा था जिन्हें कि उमने छोड़ दिया था। इस वारे में बातचीत करते करते वह रुकना, कुछ देर तक मोचता रहता। फिर भय में पीला पड़ जाता और थोड़ा देर बाद गुनगुनाने लगता और अपनी कथा का सिलमिला भूट जाता।

मिशा के प्रति उमने बहुत प्रेम जादिर किया था। सम्भवतः इस प्रेम का माध्यम से वह किसी और के प्रति अपने मन का स्नेह व्यक्त कर रहा था। वही स्टेशनों के बुक-स्टालों पर जहाँ कहीं खिलौने अथवा बच्चों को पसन्द आनेवाली चीजें मिलतीं, वह कूद पड़ता, खरीद लाता और मिशा को इन उपहारों से लाद देता।

उसने बहुत ज्यादा खारा भी था। तीन महीनों में वह सो नहीं पाया था। वह शिकायत भर लडके में करता, जब कभी वह खवम रखने का चेष्टा करता है तो उमने इतनी खरणा भुगतनी पड़ती, जिमकी कल्पना तक नहीं की जा सकती।

अंतिम समय में वह तेजी के साथ उनके डिब्बे में आया, उसने गार्डन का हाथ पकड़ लिया। यह उमने कुछ करना चाहता था। लेकिन वह कह नहीं पाया। इसके बाद वह तेजी के साथ कोरिडोर की ओर लपका और गाबा के नीचे कूद पड़ा।

मृतक व्यक्ति की अंतिम भेंट यूरास के खनिज पदार्थों का छोटी सी टब्वी को खोल कर मिशा टब्वे में बैठ गया। अचानक एक हलचल-सी मच गयी। एक डाक्टर दो पुलिस और एक मेनिस्टेट को लिये एक ट्राला समानान्तर पटरी पर दौड़ती हुई आकर रुक गयी। ये सब लोग फुर्ति से कूद पड़े। साधारण रूप से औपचारिक प्रश्न पूछे गये और उनका खवाब लिया गया। बाल्कन फिमिलते-स्टेकते पुलिस के विप्राहियों के साथ गाट ने मिल कर शव को नीचे निकाला। एक प्रामीण किमान हवा रो पडा। मुसाफिरों को अपने-अपने स्थान पर जाने का बाल्कन मिया। गार्ड ने सीटी बजाई और रेलगाडी चल पड़ा।

८

चारों ओर दग्ध हुए कमरे से निकल भागने का प्रयास करते हुए निकलने से गुस्से में सोना—यह है पवित्रतम सयोग !' चूँकि दरवाज़े के बाहर से मेहमानों की आवाज़ आ रहा था इसलिए मुक्ति की कोई राह नहीं थी। एक उमरु अपना और दूसरा बोरभोजनिकाव का—य दो पन्ना इतने कमरे में थे। थोड़ी देर तक सोचते रहने के बाद वह रगता हुआ पलंग के नीचे जाकर छिप गया। बाहर लोग उसे पुकार रहे थे। उनकी आवाज़ सुनाई नहीं रही थी। मन्त्रियों को उसका इस तरह गायब हो जाने पर आश्चर्य हो रहा था और अन्ततः वे उस को खोजते हुए उस मन्त्र के कमरे की ओर आ रहे थे।

—खर फाइ उपाय नहीं—निकोलाय निमोन्गायाव ने घुरा से कहा—चल आओ। तुम्हारा मित्र शायद थोड़ा देर बाद लौट आए। इनके बाद तुम उसके साथ खेल सकोगे।

वे पीठमग्न में छात्रों के असन्तोष की चर्चा करने बैठ गये। गेटा ही कष्टपूर्ण अवस्था में और भेदे तरीके में निकली पन्ना के नीचे छिपा पड़ा रहा। आदित्य जब वे बराम्द के ओर चले गये तो निकली अपने गुप्त स्थान से निकल उमने धीरे से खिड़की खाली और बाहर दूढ़ कर पाक में चला गया।

कल वह रात भर नहीं सो सका था, इसलिए इस समय वह अलसता हुआ और बेचैनी महसूस कर रहा था। वह चौदह वर्ष का हो चुका था और उसे बच्चा कहे जाने पर मखल एतराज था। वह इस विशिष्टता से तंग आ गया था। रात भर जागने के बाद जब वह पाक में चला गया उस समय सूर्य पेरने के कंधे पर रोशनी डाल रहा था और उनका कंधा की सुदीर्घ ओसभरी परछाई जमान पर पड़ रहा गहा थी। य परछाईया मिलतुल काला नहीं थी बल्कि भूरे रंग के नीलगन्धर्व की तरह दिखाई दे रही थी। य तरल परछाईया भूमि पर किसी कंधे की पतला उगलिया का तरह प्रकाश की लहरों से चिरी रही थी। प्रातःकाल की मदभरा समार चलन ही वाला थी। निम्ना के कदमों से थोड़ी देर पर कुछ चमकीला रम्याए घाम पर चमकनेवाला आंस की तरह प्रकाशित हो उठीं। निम्नतर प्रकाशित होनेवाला वह प्रकाश पृथिवी में समा नहीं पाया था। तब पानो अनपेक्षित, तन-निष्ठाशीलता के कारण वह एक ओर से निकल कर फल गया। दरअसल दुःख रहनेवाला यह एक साप था। निम्नी काप उठा।